राजस्थान की फड़ चित्रण शैली

*डॉ. नीरू कल्ला

राजस्थान के भीलवाड़ा क्षेत्र में कपड़े की पृष्ठभूमि पर लोक देवता देवनारायण एवं पाबूजी आदि के जीवन पर आधारित एवं उनकी शौर्य गाथाओं पर बनाए जाने वाले पारम्परिक अनुष्ठानिक कुंडलित चित्र, पड़/फड़ चित्र कहलाते हैं। फड़ केवल एक चित्र भर नहीं माना जाता, यह अपने आप में देव स्वरूप है। इसलिए इसे बनाने वाले चित्रकार और बाँचने वाले भोपा, दोनों ही इसे पवित्र मानते हैं। भोपा पूरी फड़ को साक्षात् देवता मानते हैं, वे इसे प्रति दिन धूप-अगरबत्ती लगाते हैं और इसे घर में पवित्र स्थान पर रखते हैं। वे एक बार इसे खोलने के बाद बिना बाँचे बंद नहीं करते। फड़ के पुराने हो जाने पर उसे इधर-उधर नहीं फेंका जाता बल्कि पुष्कर ले जाकर पवित्र सरोवर में विसर्जित किया जाता है।

अधिकांश फड़ चित्रकारों का मानना है कि राजस्थान के भीलवाड़ा एवं शाहपुरा में बनाए जाने वाले फड़ चित्रों का इतिहास लगभग ६०० वर्ष पुराना है। वे मानते हैं कि यहाँ के छीपा चित्रकारों ने फड़ चित्रण के लिए मेवाड़ शैली के अंतर्गत एक विशिष्ट चित्रण शैली का विकास किया जिसे फड़ चित्र शैली के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ के छीपा चित्रकार अपने को जोशी कहते हैं, जिनकी अनेक पीढ़ियाँ यहाँ बीत गयी हैं। राजस्थान का छीपा समुदाय कपड़ा छपाई का कार्य करता है। जोशी फड़ चित्रकार मानते हैं कि वे छीपा समुदाय से हैं परन्तु उनके पूर्वज कपड़ा छपाई नहीं बल्कि चित्रित जन्मकुण्डलियाँ बनाते थे और दीवारों पर चित्रकारी करते थे। उनके एक समूह ने कालांतर में फड़ चित्रांकन आरम्भ किया।

आज जितने भी जोशी फड़ चित्रकार परिवार कार्यरत हैं वे सभी एक ही कुटुंब के सदस्य हैं। यह जोशी चित्रकार भीलवाड़ा से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित पुर गाँव के निवासी थे। उस समय इस गाँव को पुरमंडल कहते थे। इनके कुछ कुनबेदार आज भी इस गाँव में रहते हैं, इनकी कुलदेवी का स्थान भी यहीं है। वर्ष में एक बार एवं महत्वपूर्ण अवसरों पर अपनी कुलदेवी की पूजा हेतु यह सभी जोशी परिवार यहाँ आते रहते हैं। सन् २००० तक यहाँ गणेश जोशी नामक फड़ चित्रकार कार्यरत थे, अब उनके परिवार ने चित्रकारी बंद कर दी है। जोशी चित्रकार परिवारों में प्रचलित स्मृतियों के अनुसार पुर गाँव में दो जोशी चित्रकार भाई रहते थे, जब मुग़ल सम्राट शाहजहाँ के समय में राजा सुजान सिंह द्वारा सन् १६३१ ईस्वी में शाहपुरा नगर बसाया गया उस समय, पुर गाँव से पाँचाजी जोशी नामक चित्रकार को शाहपुरा बुला लिया गया, तभी से शाहपुरा में फड़ चित्रकारी आरम्भ हुई।

यह कथाचित्र, पड़ अथवा फड़ चित्र कहलाते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि फड़ एक अपभ्रंश है जिसका प्रादुर्भाव पढ़ शब्द से हुआ है जिसका तात्पर्य है पढ़ना। जब भोपा लोकगायक स्थानीय शौर्य गाथाओं पर आधारित इन चित्रों को प्रस्तुत करते हैं तब ऐसा लगता है कि वे इन चित्रों के माध्यम से उन शौर्य गाथाओं

को पढ़ रहे हैं। परन्तु फड़ शब्द अधिक मान्य और आम प्रचलन में है। स्वयं भोपा भी इन चित्रों को फड़ ही कहते हैं।

कुछ लोग फड़ चित्रों को पटचित्रों से भी जोड़ कर देखते हैं, क्योंकि यह दोनों ही कपड़े की सतह पर चित्रित किये जाते हैं और इनका स्वरुप विवरणात्मक होता है। परन्तु पट, सूती कपड़े की दो सतहों को आपस में चिपका कर बनाया जाता है जबकि फड़ कपड़े की एक सतह से बनाई जाती है। पटचित्र ओडिशा की जगन्नाथ उपासना से सम्बद्ध होते हैं और फड़ चित्र राजस्थान के लोक देवताओं की शौर्य गाथाओं पर आधारित हैं।

फड़ चित्र किस प्रकार बनना आरम्भ हुए इस सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित हैं। कुछ फड़ चित्रकार मानते हैं कि प्राचीन काल में भोपा गायक राजस्थान में प्रचलित लोकदेवताओं की गाथाएं गा-गाकर सुनाया करते थे। उन्हें लगा की यदि इन कथाओं पर आधारित चित्र बनवाकर गायन के साथ प्रस्तुत किये जाएं तो प्रस्तुति अधिक प्रभावशाली बन पड़ेगी और यजमानों से अधिक धन-धान्य मिलेगा। अतः उन्होंने फड़ चित्रकारों के पूर्वजों से इन लोक कथाओं पर आधारित चित्र बनाने का आग्रह किया और इस प्रकार फड़ चित्र बनना आरम्भ हुए।

राजस्थान की लोक कथाओं के जानकार डॉक्टर महेंद्र भानावत द्वारा प्रस्तुत किंवदंती के अनुसार जब देवनारायण जी का जीवनकाल पूर्ण होने वाला था तब भक्तों ने आग्रह किया कि लोक छोड़ने से पहले वे अपनी छवि भक्तों के लिए स्मृति स्वरुप प्रदान कर जाएँ। इस आग्रह पर स्वयं देवनारायण ने छोचू भाट, जोकि उनके कुल का भाट था, से कहा कि तुम चतर छीपा के घर जाओ और उससे मेरी एक तस्वीर बनवाकर लाओ। भाट ने जाकर चतर छीपा को कहा कि वह उसे भगवान की तस्वीर बना दे, 'तस्वीर कैसी बनेगी यह मैं बताता हूँ–उसमें चौबीस तो अवतार बनाओ और देवनारायण के कुल संबंधी, ज़मीन-आसमान में जितनी घटनाएं हुई हैं वह सब बनाओ'। चित्र पूरा होने पर भाट उसे लेकर देवनारायण के पास गया। चित्र देखकर भगवान बोले, 'अरे भाट मैंने तो एक चित्र के लिए कहा था तू ये क्या फड़ की फड़ ले आया'। तभी से यह चित्र, फड़ चित्र कहलाये और इन्हें बनाने की परंपरा आरम्भ हुई।

राजस्थान में जो पारम्परिक फड़ चित्र बनाये जाते हैं वे निम्न प्रकार के हैं–

१. देवनारायण की फड़

देवनारायण, राजस्थान के पूज्यनीय लोक देवता हैं जिन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है। ऐतिहासिक रूप से उनके जीवन काल के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ विद्वान उनका जीवन काल विक्रम संवत् १२०० से १४०० के मध्य मानते हैं।

२. पाबूजी की फड़

यह फड़, राजस्थान की सर्वाधिक लोकप्रिय फड़ है। इसकी लंबाई १५ से २० हाथ तक होती है। इसमें मारवाड़ के कोलू गांव में जन्मे पाबूजी की जीवनगाथा चित्रित की जाती है।

३. गोगाजी की फड़

गोगाजी जिन्हें जाहर वीर गोगा भी कहा जाता है राजस्थान के लोकप्रिय लोक देवता हैं, इन्हें पीर के रूप में पूजा जाता है। इन्हे सर्पों का देव भी कहा जाता है क्योंकि ये सर्प दंश से रक्षा करते हैं।

४. रामदेव की फड़

रामदेव की फड़ का प्रचलन पाबूजी की फड़ के बाद हुआ और यह पहले हाड़ौती क्षेत्र में प्रचलित हुई, वहाँ से यह मेवाड़ और मारवाड़ तक फैल गयी। रामदेव, राजस्थान के एक महत्वपूर्ण लोक देवता हैं जिन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है।

५. माताजी की फड़

इसे भैंसासुर की फड़ भी कहा जाता है। इस फड़ का प्रचलन वागरी समुदाय में है। इस फड़ का वाचन नहीं होता, इसे घर में रखा जाता है।

उपरोक्त फड़ों के अतिरिक्त रामदला एवं कृष्णदला की फड़ें भी बनाई जाती हैं। इन दोनों ही फड़ों का प्रचलन अधिक पुराना नहीं हैं।

फड़ चित्रों का प्रारूप इस प्रकार निरूपित किया जाता है कि उसे देखकर दर्शक कथा का ठीक से अनुमान नहीं कर सकते। बिना भोपा द्वारा की गई विवेचना के पूर्ण चित्रित कथा का आनंद लेना संभव नहीं है। कथानक के चित्रण में इसी बिखराव के कारण भोपा-भोपिन को नृत्य अदायगी और भावाभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

फड़ चित्रकार मानते हैं कि फड़ के प्रारूप में स्थान विभाजन में घटनाओं के स्थानों को प्राथमिकता दी गयी है। जैसे पाबूजी की फड़ में अजमेर, पुष्कर, कोलूमण्ड, लंका, सोड़ा गाँव आदि स्थानों की एक निश्चित स्थिति होती है और वहाँ घटने वाली घटनाएँ इनके आस-पास चित्रित की जाती हैं। फड़ में इन घटनाओं का स्थान इतना रूढ़ होता है कि भोपा आँखें बंद करके भी उन्हें इंगित कर सकता है।

*सहायक आचार्य
चित्रकला विभाग
एस.एस.जैन सुबोध बी.एड कॉलेज
जयपुर (राज.)